GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

मंदिर: एक जीवंत परंपरा

अनीता तन्ना, डॉ. अरुणा जाडेजा

शोध छात्रा
लकुलीश योग विश्वविद्यालय
अहमदाबाद

लकुलीश योग विश्वविद्यालय
अहमदाबाद

संक्षेप

सनातन हिंदू धर्म में प्रार्थना के लिए जो स्थल है उसे मंदिर कहा जाता है। हमारे भारतीय शास्त्र कहते हैं कि परमेश्वर के पास जाने से, संतो की पवित्र वाणी सुनने से और प्रार्थना करने से मन को शांति मिलती है। हर एक धर्म अपनी परंपरा अनुसार प्रार्थना स्थल और पूजा अर्चना के लिए भव्य और आध्यात्मिक स्मारक का निर्माण करते हैं। हमारे धर्म ग्रंथों में प्रार्थना के इन स्थलों को औषधि के रूप में समझा जाता है।

मंदिरो का निर्माण अलग अलग शैलियों को ध्यान में रख कर होता है। पर अधिकतर मंदिर ऐसी पद्धति से बनते थे जिसमे कुण्डलिनी चक्र के हिसाब से गर्भगृह, मंडप, प्रस्थान, परिक्रमा आदि का निर्माण होता था और उस चक्र के हिसाब से उस जगह का निर्माण होता था। उस जगह के पास जाने से व बैठने से व्यक्ति को चक्र जागृत करने में सहयोग मिलता था। यही कारण होता है की आज भी मंदिरो में जाने से व्यक्ति को मानसिक रूप से शांति का अनुभव होता है।

मंदिर हमारे जीवन और हमारे जगत को अर्थ देता है। जीवन और जगत यानि कि ब्रह्माण्ड। यह दोनों जिस से बने हुए हैं उसका आंतरिक दर्शन हमें मंदिर से प्राप्त होता है। अर्थात मंदिर में जाने से हम बाहर के जगत से दूर हो कर अपने आप के साथ जुडते है। मंदिर हमारे समाज के धार्मिक मानस का आलेखन और अनुमोदन करता है। मनुष्य सामाजिक तरीके से कितना स्वस्थ है और समाज कितना स्वच्छ है उसकी छवि मंदिरों में से मिलती है।

मंदिर की चित्रकला, स्थापत्यकला, संगीतकला, नृत्यकला और ईश्वरी विद्या द्वारा हमारी भारीतय परंपरा जीवंत है।

संकेत शब्द : *मंदिर, जीवंत परंपरा, भारतीय शास्त्रो*

विषय प्रवेश:

मंदिर शब्द व भाषा की व्युत्पत्ति:

मंदिर का मतलब है भगवान का निवास स्थान।

गूजराती सार्थ जोडणी कोश में मंदिर का एक मतलब घर बताया गया है। घर को निवास, आलय भी कहा जाता है। जैसे शिवालय, देवघर, देवालय।

मंदिर शब्द संस्कृत मंद(मन्द् धातु + किरच् प्रत्यय) से बना माना जाता है। उसका अर्थ विश्रांति, शाता (tranquility) का स्थान होने से गृह के लिए प्रयुक्त होता था, काल परीवर्तन के साथ मंदिर शब्द देवगृह के लिए आरुढ हो गया। महाकाव्य और सूत्रग्रन्थो में मंदिर शब्द के उपलक्ष में देवालय, देवगृह, देवस्थान आदि शब्दो का प्रयोग हुआ है। मंदिर का सर्व प्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। भारतीय प्राचीन ग्रंथो में मंदिर शब्द का उपयोग निवास के अर्थ में किया गया है।

भारतीय भाषाओ मे मंदिर के लिए अलग-अलग शब्द का उपयोग पाया जाता है। तमिल भाषा में मंदिर के लिए 'कोविल', कन्नड में 'देवस्थान' व 'गुडी', तेलुगू में 'आलयम्', मलयालम में 'क्षेत्रम्' ईत्यादी शब्दो का प्रयोग होता है।

अंग्रेजी में मंदिर के लिए 'टेम्पल' (Temple) शब्द का उपयोग किया जाता है। टेम्पल शब्द मूलतः लैटिन भाषा के टेम्पलम (Templum) शब्द से बना है।

मंदिर निर्माण:

मंदिर निर्माण के बारे में एक अंग्रेज लेखक का मत है की,

For several millennia the hindus have been worshipping the deities of nature through prayers. They venerated the forces of nature like Varunadeva(the water-god,) Agnideva(fire-god), Indra deva (rain –god), Sury deva(sun-god) and other by offering prayers and yajnas became a daily feature in the lives of Hinuds in the early vedic period. To keep the yajana fires from beings snuffed out by wind and rain, they built shelters to cover the vedis(sacrificial platforms), over time these developed in to shrines, and precise science of mandir building was born. The altar of sacrificial fire developed in to the garbha- gruha or sanctum sanetorum. By the end of the vedic period artists and sculptors began to make visual representations of the deities in the form of pictures and sculptures.
(The Hindu Temple- II, STELLA KRAMRISCH, 1976,)

कई सहस्राब्दियों से हिंदू प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रकृति के देवताओं की पूजा करते रहे हैं। उन्होंने प्रकृति की शक्तियों जैसे वरुणदेव (जल-देवता), अग्निदेव (अग्नि-देवता), इंद्र देव (वर्षा-देवता), सूर्य देव (सूर्य-देवता) और अन्य की प्रार्थना और यज्ञ करके पूजा की। ये परंपरा प्रारंभिक वैदिक काल में हिंदुओं के जीवन कि दैनिक विशेषता बन गई। यज्ञ की आग को हवा और बारिश से बुझने से बचाने के लिए उन्होंने वेदियों (यज्ञ प्लेटफार्मों) को ढकने के लिए आश्रयों का निर्माण किया। समय के साथ ये मंदिरों में विकसित हुए, और मंदिर निर्माण के सटीक विज्ञान का जन्म हुआ। यज्ञ की अग्नि की वेदी को गर्भ-गृह या पवित्र स्थान के रूप में विकसित किया गया। वैदिक काल के अंत तक कलाकारों और मूर्तिकारों ने चित्रों और मूर्तियों के रूप में देवताओं का ताद्रश्य प्रतिनिधित्व करना शुरू कर दिया।

काल-प्रवाह में पौराणिक युग के वैदिक देवता क्रमशः मूर्त होते गए और उनके साथ देवालय के रूप में मंदिर बनने प्रारंभ हो गए, मंदिर निर्माण की अगणित शृखंला बनती गई, जो समय के बदलाव के साथ आज एक जीवंत परंपरा है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

मंदिर का इतिहास:

मंदिर की रचना लगभग 10 हजार वर्ष पूर्व हुई थी। रामायण और महाभारत काल में मंदिर होते थे इसके प्रमाण हैं। आज से 7 हजार 200 वर्ष पूर्व अर्थात 5114 ईस्वी पूर्व में रामायण महाकाव्य लिखा गया था। रामायण में सीताजी द्वारा गौरी मंदिर में पूजा का वर्णन मंदिर की प्राचीनता का प्रमाण है।

ईसी प्रकार महाभारत में देवी मंदिर में पूजा के लिए आई हुई रुक्मणि का विवाह के लिए कृष्ण के साथ भागने का वर्णन मिलता है। यह घटना उस काल में मंदिर और देवी-देवताओं की पूजा का महत्व था उसका सबूत देती है और कुंवारी कन्याए ईच्छीत वर(पति) पाने के लिए गौरी(पार्वती) की पूजा करती है ये हमारी परंपरा आज भी जीवंत है। आज आषाढ माह में कुंवारी कन्याए ईच्छीत पति पाने के लिए गौरी व्रत रखती है। ईस तरह से मंदिर भारतीय जीवन का अनूठा पहलू है।

लंका पर चढाइ करने से पूर्व भारत के दक्षिण में समुद्र तट पर भगवान राम द्वारा शिव मंदिर (जो आज रामेश्वर के नाम से प्रचलित है)की स्थापना का जिक्र है। भारत में स्थित शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों (मंदिरो)को प्राचीन माना जाता है। समय समय पर इन पुरातन कालिन मंदिरो का जीर्णोद्धार किया गया है। मंदिरो के निर्माणो पर सविशेष ध्यान बौद्ध और जैन धर्म के उदय के दौर में दिया जाने लगा।

मंदिर का वर्तमान:

टेम्पल्स ओफ इन्डिया वेबसाईट के अनुसार वर्तमान समय में भारत देश के विभिन्न राज्यो में स्थित मंदिरो की संख्या हजारो में पाई जाती है।

राज्य ----------मंदिर की संख्या
तमिलनाडु ------79154
महाराष्ट्र ------ 77283
कर्णाटक -------- 61232
प.बंगाळ -------- 53658
गुजरात -------- 49995
आंध्रप्रदेश ------- 47152
राजस्थान ------ 01972

ये वेबसाईट के आंकडे बताते है की 2700 से ज्यादातर देशो में प्रति दिन,एक व्यक्ति धार्मिक यात्रा याने की मंदिर (तीर्थ स्थान) पर व्यय करती है जो की शिक्षा के खर्च से अधिक है।

मंदिर निर्माण: भारतीय धर्म और अध्यात्म का वहन

भारतीय संस्कृति की अपनी अनोखी भौतिक संरचना है। जो वास्तुशास्त्र-शिल्पशास्त्र में परिलक्षित होती है। जब मंदिर, पूजागृह या व्यक्ति का निजी आवास का निर्माण करना होता है, तो संस्कृति उसके कुछ विधान सुनिश्चित करती है। उस तरह इस वास्तु, शिल्प, ज्योतिष, धर्म के कुछ शास्त्रीय विधान होते है, जो कुछ दार्शिनिक व्याख्या को समझाते है। हमारी भव्य परंपरा से प्राप्त हुए लोकसंस्कृति के रंग, इन सब बातो को ध्यान में रखकर मंदिर निर्माण की प्रक्रिया की जाती है। प्राचीन मंदिरो में अधिकतर मंदिर कर्क रेखा या नक्षत्रो के ठीक ऊपर बनाए गए थे। ये मंदिरो ऊर्जा और प्रार्थना के केन्द्र हुआ करते थे।

मानव शरीर मंदिर का प्रतिक:

श्रीमद् भगवद् गीता के अनुसार

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो[1].....॥ १५,१५॥

अर्थात मैं प्रत्येक जीव के हृदय में आसीन हूँ ... ॥ १५,१५॥

हमारे शरीर में स्थित हृदय में भगवान का निवास होता है। उसी प्रकार मंदिर के आंतरिक भाग में गर्भगृह होता है। इस पवित्र स्थान पर भगवान की एक मूर्ति विराजमान रहती है। मंदिर शरीर का प्रतीक है और गर्भगृह हृदय का प्रतीक है जहां हम वास्तव में परमात्मा का अनुभव करते हैं।

दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जहां मंदिर की पाषाण व धातु की मूर्तिओ, शिल्पो में प्राण को प्रतिष्ठित किया जाता है। यानी की मूर्ति में प्राणों का संचार करके उनमें चेतना प्रगट की जाती है। मंदिरो की प्रितमाओं में प्राण प्रतिष्ठा करने का बहुत बडा महोत्सव होता है। एक बार मंदिरो की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठित हो जाती है तो वह मूर्ति नहीं भगवान का विग्रह कहलाता है। जो की परमात्मा का सगुण साकार रूप कहलाता है।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान ने परमात्माके सगुण साकार रूप का जिक्र किया है।

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।[2]

श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ १२,२॥

अर्थात

श्री भगवान बोलेः जो मनुष्य मेरे साकार रूप में अपने मन को स्थिर(त) करते है और श्रद्धा पूर्वक मेरी पूजा करने में लगे रहते है वो मेरी मेरी दृष्टि में (उत्तम योगी मान्य हैं) परम सिद्ध है।

मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति ही साक्षात परमात्मा का स्वरूप बन जाती है।

जो मनुष्य को अपने आप में स्थित आत्मतत्त्व से जुडने की प्रेरणा देती है।

हमारा मन अति चंचळ है। मनोविज्ञान के अनुरूप मन की एकाग्रत के लिए कोई एक आधार चाहिए। मंदिर की मूर्ति हमारे मन औऱ चित्त को आधार देती है। इस तरह मंदिर भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का वहन करते है।

પ્રત્યેક મંદિરની બાહ્ય સંરચનાની મૂળ સંકલ્પના યોગશાસ્ત્ર પર અવલંબિત છે એવું જોવા મળે છે. મંદિરને વાસ્તુશાસ્ત્રની રીતે જોઈએ તો એના છ અંગોના ક્રમવાર નિર્માણ કાર્ય પર મંદિરની રચના થાય છે. જગતિ (મંદિર નિર્માણનો પાયો), અધિષ્ઠાન(બેઠકનું નિર્માણ), ગર્ભગૃહ, શિખર, આમલક (શિખર અને કળશ વચ્ચેનો ગોળ ભાગ) અને કળશ. આ છ નિર્માણ અંગોને શરીરમાં આવેલા ષટ્ચક્રોના પ્રતીક ગણાવ્યા છે.

મૂલધાર ચક્ર - જગતિ
સ્વાધિષ્ઠાન ચક્ર - અધિષ્ઠાન

https://www.gapbhasha.org/

મણિપુર ચક્ર - ગર્ભગૃહ

અનાહતચક્ર - શિખર

વિશુદ્ધ ચક્ર - આમલક

આજ્ઞાચક્ર ચક્ર - કળશ

સહસ્રાર ચક્ર - ધજા

આત્મા છ ચક્રોને પસાર કરતો અંતે સાતમાં સહસ્રાર ચક્રમાં પહોંચીને અનંતમા લહેરાતો રહે છે, ધજાની જેમ. (શબ્દસર વર્ષઃ-૨૦ સળંગ અંક – ૨૩૨, ઓક્ટોબર, ૨૦૨૦)

प्रत्येक मंदिर की बाह्य संरचना की मूल अवधारणा योग शास्त्र पर आधारित है ऐसा प्रतीत होता है। अगर हम मंदिर को वास्तुशास्त्र के नजरिए से देखें तो मंदिर की संरचना छह अंगों के क्रमबद्ध निर्माण पर **निर्भर** है। जगति (मंदिर निर्माण मंच), अधिष्ठान (आसन का निर्माण), गर्भगृह, शिखर, अमलक (शिखर और कलश के बीच का गोलाकार भाग) और कलश छह निर्माण अंग हैं जो षट्चक्र के प्रतीक माने जाते हैं।

मूलाधार चक्र – जगति

स्वाधिष्ठान चक्र - अधिष्ठान

मणिपुर चक्र - गर्भगृह

अनाहतचक्र - शिखर

विशुद्ध चक्र - आमलक

आज्ञाचक्र चक्र - कलश

सहस्रार चक्र – ध्वज

आत्मा छह चक्रों से गुजरती हुई अंततः सातवें सहस्रार चक्र तक पहुंचती है और अनंत में तरंगती रहती है। झंडे की तरह।

योग शास्त्र आधारित मंदिरः

भारत के गुजरात में बडौदा शहेर से 35 किमी की दूरी पर पाशुपत संप्रदाय का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। ऐसा माना जाता है कि पाशुपत सम्प्रदाय के संस्थापक श्री लकुलीशजी काया को धारण कर यहां पहुंचे, इसलिए इस स्थान को 'कायावरोहण' कहा जाता है। यहां सुंदर मूर्तियों से युक्त एक योग मंदिर है, जिसमें एक ज्योतिर्लिंग स्थापित है। श्री कृपालवानंद स्वामी ने इस मंदिर की रचना में पुरातन-अर्वाचीन वास्तुकला का सुंदर संयोजन कीया है। मंदिर की दिवारों पर विभिन्न योग मुद्राओं को भी उकेरा गया है।

जबलपुर में चौंसठ योगिनी मंदिर भारत के इतिहास में एक अजुबा है। इस मंदिर में देवी दुर्गा की चौंसठ अनुषंगिकों की प्रतिमा है जीसे चौंसठ योगिनियां कहा जाता हैं। यह मंदर गोलकी मठ के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर के मध्य में शिव-पार्वती के वृषभ (बैल) पर सवार आलौकिक प्रतिमा है, और समस्त योगिनियां अलौकिक शक्तिओं से सम्पन्न है। प्रमुख रूप से आठ योगिनियां हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं:-

1.सुर-सुंदरी, 2. मनोहरा, 3. कनकवती, 4. कामेश्वरी, 5. रति सुंदरी, 6. पद्मिनी,
7. नतिनी और 8. मधुमती योगिनी।

मंदिर की शैलियाँ:

व्यापक रुप से प्रत्येक मंदिर में दो किस्म की कक्षीय संरचना होती है- गर्भगृह तथा मंडप। गर्भगृह में मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा के लिये खुली जगह होती है। यह परिक्रमा पथ पूजन विधान के अतिरिक्त दर्शन हेतु आए श्रद्धालुओं का आवागमन सरल तथा सुनिश्चित करता है।

गर्भगृह के उपर बहार शिखर होता है, जो मंदिर की शैलियों के वर्गीकरण का प्रधान निर्धारक है। शिखर व अधिष्ठान दोनों अकसर जटिल ज्यामिटीय संरचना के साथ बनते है। खासकर नागर शैली के मंदिरो में शिखर के साथ उपशिखर जुडते चले जाते है, जो अनंतता के प्रतीक माने जाते है। कई बार कलश के उपर ध्वज भी लगाये जाते है। ये ध्वज विभिन्न आकार और अलग अलग रंग के पाये जाते है।

मंदिर की रचना में एक मुख्य मंडप के अलावा लघु मंडप भी हो सकते है, जो दर्शन के अतिरिक्त कीर्तन, नर्तन आदि के लिए भी उपयुक्त होते है। बहुधा प्रथम मंडप सभामंडप(दर्शन हेतु) व द्वितिय मंडप रंगमंडप(कीर्तन,नर्तन हेतु) के रुप में प्रयुक्त होते थे।

आज भी भारत के कई मंदिरो में ये व्यवस्था है और उसका ईसी तरह उपयोग कीया जा रहा है। पंढरपुर के प्रसिद्ध विठ्ठल मंदिर में ईसी प्रकार के दो सभामंडप देखे जाते है।

मंदिर निर्माण में प्रमुखतः पत्थर का प्रयोग होता रहा है, किंतु ईंटों से बने मंदिर भी प्रचुर मात्रा में मिलते है। मौर्य काल में काष्ठ मंदिरों केभी साक्ष्य हैं। विशेषतः पहाडी क्षेत्रो में काष्ठ मंडपो की अत्यधिक युति देखने को मिलती है। नेपाळ के काठमांडु का नामकरण ही काठ मंडप शब्द से हूआ है, जिस में लकडी के साथ ईंटो का मोहक समन्वय है।

शौलियाँ:

भारतीय स्थापत्यकला व शिल्पशास्त्रों के अनुसार मंदिरों विशेषतः हिंदू मंदिरों की तीन प्रधान
शौलियाँ है।

1- नागर शैलीः मुख्यतः उत्तर भारतीय शैली

2- द्रविड शैलीः मुख्यतः दक्षिण भारतीय शैली

3- वेसर शैलीः नागर-द्रविड मिश्रित मुख्यतः दक्षिण-पश्चिम भारतीय शैली

ये वर्गीकरण स्थूल है। समय व स्थानिय संस्कृति की भिन्नता के साथ इनमें अनेक भेद व मिश्रण देखने को मिलते है। इनके अलावा हिमालय में हिमाचल, उत्तराखंड में अपनी पहाडी

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

शैली प्रमुख है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में पूर्वोत्तरीय शैली देखी जाती है। इसी प्रकार राजस्थान में कई मध्यकालीन मंदिरों में राजपूताना शैली का प्रचुर उपयोग या संगम है। आज, अति आधुनिक काल मंदिर रचना में ग्रीक-रोमन वा यूरोपीय शैली का प्रभाव या मिश्रण देखा जाता है।

मंदिर के प्रकार:

भारत में शिव मंदिर, देवी माता(शक्ति) मंदिर, गणेश मंदिर, राम मंदिर, हनुमानजी का मंदिर, कृष्ण मंदिर, सांइ बाबा का मंदिर, समाधि मंदिर(संत ज्ञानेश्वर जीवंत समाधि मंदिर जैसे), स्वामीनारायण मंदिर, इत्यादि मंदिर है।

मंदिर- भक्ति योग की अभिव्यक्ति का स्थल:

भक्त अपने आप को भगवान को समर्पित करके उनके साथ जुडता है, वह भक्ति योग है।

भक्ति याने भगवान के प्रति प्रेम, संपूर्ण शरणागति। मंदिर भगवान के प्रति भाव प्रगट करने का पवित्र स्थल है। भक्त अपनी यथा मति यथा शक्ति अनुसार भगवान की भक्ति करता है। फूल, माला, भोग(खाद्य पदार्थ),वस्त्र और पैसे ईत्यादी के रुप में भक्त भगवान के प्रति अपना प्रेमभाव व्यक्त करता है। परमात्मा के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति भक्त मंदिर के माध्यम से सरल, सहज कर शकता है।

श्रीमद् भागवत् पुराण में भक्ति के नव प्रकार बताये गये है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।

अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥[3](७। ५। २३)

अर्थात भगवान के नाम का श्रवण, किर्तन, स्मरण और उनके चरणों की सेवा, पूजा, वंदन, करना भी भक्ति है। भगवान के साथ मैत्री करके और उनको आत्म-समर्पण करना भक्ति ही है।

3(7.5.23)

ये सभी प्रकार की भक्ति मंदिर में संभव होती है।

मंदिर एक जीवंत परंपरा:

मंदिर की अस्खलित जीवंतता का परिचय हमे मंदिर की प्रमुख पांच परंपराओ, पद्धति, व्यवहार के जरिये होता है।

हर एक मंदिर में मुख्य भगवान से जुडी हुइ परंपरा, स्थानिक संस्कृति, रीति रिवाज के हिसाब से अलग अलग प्रकार की गतिविधियां पायी जाती है। उनमें पांच बहुधा सर्व सामान्य है।

1- मंदिर के मुख्य देव की पूजा-अर्चना
2- प्रचलित त्यौहार और उनके उत्सव
3- उत्सवो ओर परंपरा ओ के जरिये जल एवं जलीय जंतुओं, पौधों का संरक्षण ओर संवर्धन
4- यात्राएँ- रथयात्रा, पालखी यात्रा
5- मुक्तिधाम

मंदिर के मुख्य देव की पूजा-अर्चना में समय समय पर आरती, श्रृंगार, भोग धराना, शयन आदि प्रक्रिया होती है। ये सब बाते शास्त्रो निर्धारित, स्थानिय संस्कृति, प्रथा पर मायने रखती है। उन बातो में स्थल-काल को भी ध्यान में रखा जाता है। जैसे की गर्मी की मौसम में भगवान की मूर्ति को सूती वस्त्र पहनाये जाते है। भगवान को आमरस का भोग लगाया जाता है। कई मंदिरो में हर रोज भगवान को खीचडी का भोग लगता है। त्यौहारो में मंदिरो में छप्पन प्रकार के भोग भी लगते है।

भगवान को लगाया गया भोग बाद में भक्तो को प्रसाद के रुप में बांटा जाता है।

भारत के प्रसिद्ध मंदिरो में मनाये जाने वाले त्यौहार और उनके उत्सव सारे संसार में प्रसिद्ध है।

जैसे की ओडिसा के जगन्नाथ मंदिर की रथयात्रा में देश-विदेश से लाखो लोग हर साल हिस्सा लेते है। उसी तरह देश के भिन्न भिन्न मंदिरो के उत्सवो में संपूर्ण श्रद्धा के साथ नियमित रुप से हजारो लोग हिस्सा लेकर के अपने आपको भाग्यशाली मानते है।

मंदिर के उत्सवो में हमारी प्रकृति का संरक्षण ओर उसके संवर्धन का संदेश मिलता है। भारतीय परंपरा में जल देवता,नाग देवता,वृक्ष देवता, सूर्य देवता का पूजन कीया जाता है। उत्तराखंड में गंगोत्री में गंगा नदी का मंदिर है। काशी के घाट पर गंगा नदी की आरती की जाती है। ये सारी बाते व्यक्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कुछ शिक्षा देती है।

भारत का नया संसद भवन – लोकतंत्र का मंदिर:

28 मे-2023 के दिन भारत के राजकिय इतिहास में एक नया सोनेरी अध्याय जुड गया। देश के प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने नइ संसद भवन का लोकार्पण कीया। जो आधुनिक भारत, डिझिटल इन्डिया और भारतीय संस्कृति, सभ्यता का प्रतिक है। प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने संसद में सेंगोल की पूजा करके दंडवत प्रणाम कीया। जिस तरह हम मंदिरो में भगवान की मूर्ति के आगे दंडवत प्रणाम करते है।

उन्होने कहा कि, "यह सिर्फ भवन नहीं है, यह १४० करोड भारतीयों की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है। यह हमारे लोकतंत्र का मंदिर है।"

नये संसद भवन में भारत की धार्मिक,अध्यात्मिक,सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परंपराओ को स्थापत्य, शिल्प और चित्रकला के माध्यम द्वारा जीवंत की गइ है।

यहां विभिन्न भारतीय शास्त्रो के खास प्रसंगो को उजागर कीया है। हमारे ऋषिमुनिओ की तस्वीरें, उनका जीवन चरित्र, भगवान की लीलाओ को भी आकर्षित रुप से दर्शाई गई है। भारत की नई पीढी के लिए देश का नया संसद एक अति आधुनिक मंदिर ही है, जो हमारी जीवंत परंपरा है।

सारांश:

भारतीय परंपरा में मंदिर मनुष्य जीवन का एक जीवंत हिस्सा है। अनेक दुर्गोणो से भरे आज के समाज मे मंदिर एक आश्वासन के रुप में है। अति भौतिकवादी दुनिया में मनुष्य को अपने अस्तित्व को बचाने के लिए लगातार स्पर्धा का सामना करना पड रहा है। स्पर्धा यानी की कडा संघर्ष। ये संघर्ष की लडाई में कोई व्यक्ति जीतता है तो कोई हारता भी है। हारे हुए व्यक्ति की निराशा दूर करके फिर से आत्मविश्वास जगाने में मंदिर की प्रमुख भूमिका है। व्यक्ति को जब चारो तरफ अंधेरा नजर आता है तब वो मंदिर में परमात्मा के शरण में जाता है और अपने आप को सुरक्षित महसुस करता है।

- मंदिर का विश्व हमे जीवन ओर जगत के अर्थो को समझाता है।
- जीव ओर जगत दोनो जिसके अंश है, वो है परमात्मा। मंदिर हमे उसका प्रत्यक्ष ओर आंतिरक दर्शन करने को प्रेरित करता है।
- मंदिर परंपराओ से निर्मित भी है ओर उसमें परमतत्त्व का स्पर्श भी है।
- जीवन के अनुभवो की खुश्बू मंदिर से मिलती है।
- समाज की नीती, राजकारण ओर अर्थकारण तीनो का आंतरिक संबंध मंदिर में दिखाई देता है।

https://www.gapbhasha.org/

- समाज की श्रीमंताई, समाज का भाव ओर समाज की कला का दर्शन मंदिरो में होता है।
- स्थळ- काल के बंधन में बंधी हुइ मानवीय सभ्यता की जटिलता का निरुपण मंदिर करते है।
- मंदिर वो केवल भूतकाळ का स्मरण मात्र नहीं है, वो वर्तमान जीवन की दिल की धडकन है।
- मंदिर द्वारा व्यक्त किया गया धर्म किसी किताब में पढा गया धर्म नहीं है, बल्कि जीवन के अनुभवो से युक्त समाज की सर्वोच्च स्थिति की अभिव्यक्ति है। इसी लिए मंदिर हमारे जीवन का जीवंत दर्शन है।

संदर्भ:

[1] श्रीमद् भगवद् गीता
[2] श्रीमद् भगवद् गीता
[3] श्रीमद् भागवत पुराण
[4] डॉ। अरुणा जाडेजा,शब्दसर,अंक-20,अक्टूबर 2022
[5] मंदिरो मां मंदिर, शिव मंदिर,सी.आर.लाडुमोर,लघु शोध निबंध, लकुलीश योग विश्वविद्यालय
[6] The Hindu Temple –II ,Stella Kramrisch, University of Calcutta,1976, pp.-80
[7] The Routledge Handbook of Hindu temples materiality, social history and practice/edited by Himanshu Prabha, Salila Kulshreshtha and Uthara Svrathan, Abingdon, Oxon New York, NY Routledge, Taylor and Francis Group, 2023
[8] परात्पर Transcendence,ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, अरुण तिवारी,हार्परकोलिंग,2015
[9] https://hindi.webdunia.com
[10] https://gujarativishwakosh.org
[11] https://templesofindia.org
[12] https://www.abplive.com
[13] https://www.pmindia.gov.in/hi/news_updates

https://www.gapbhasha.org/